प्रातः क्लास 21/11/68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप रूहानी बच्चों को समझाते हैं। पहलेपहले बात समझाते हैं हे रूहानी बच्चे रूहानी बाप को याद करो। वह होते हैं जिस्मानी बच्चे और जिस्मानी बाप। तुमको अभी मिला है रूहानी बाप। रूहों को कहते हैं हे रूहानी बच्चे बाप को याद करो तो तुम पतित से पावन बन जावेंगे। इस याद की यात्रा अथवा योग अग्नि से पाप भस्म होंगे। और कोई रास्ता पापात्मा से पुण्यात्मा बनने का है नहीं। बापने समझाया है सभी पापात्मायें हैं। साधु सन्त महात्मा जो भी इस सृष्टि पर हैं सभी पतित हैं। यह है ही पतित सृष्टि। पावन सृष्टि में देवी देवतायें रहते हैं। पतित सृष्टि में पतित मनुष्य रहते हैं। पुरानी सृष्टि को पतित दुनिया कलियुग कहा जाता है। नई सृष्टि को पावन दुनिया सतयुग कहा जाता है। अभी कलियुग पुरानी दुनिया है। सतयुग को स्वर्ग, कलियुग को नर्क कहा जाता है। इस समय सारी दुनिया रौरव नर्कवासी है। वेश्यालय में रहते हैं। सतयुग को शिवालय कहा जाता है। अभी सभी रौरव नर्कवासी है। मनुष्यों को समझ में नहीं आता है क्योंकि पत्थर बुधि है। सतयुग में देवताओं को पारस बुधि कहा जाता है। यह ल०ना० पारस बुधि हैं। शिवालय के निवासी हैं। फिर यही देवतायें 84 जन्मों के अन्त में विषस बन जाते हैं। अभी सभी वेश्यालय के निवासी हैं। इन्हों को कब कोई विषस मनुष्य हाथ लगा न सके। विकारी मनुष्य को अछूत म्लेच्छ कहा जाता है। इस समय सारी दुनिया अछूत म्लेहतर है। क्योंकि विष पीते पिलाते हैं। यह देवतायें तो सम्पूर्ण निर्विकारी है ना। परन्तु पत्थर बुधि होने कारण यह कोई भी समझते नहीं हैं। भारत है वेश्यालय पतित। यह ल०ना० है समझदार पावन। कितना फर्क है। पतित होते हैं रात में। पावन होते हैं दिन में। रात भक्ति मार्ग को कहा जाता है। अनेक गुरुओं पास मनुष्य धक्का खाते रहते हैं। जन्म जन्मान्तर तीर्थ यात्रा पर धक्के खाते हैं। सतयुग में तीर्थ यात्रा, शास्त्रआदि होते नहीं क्योंकि सदगति में है। इस समय सभी की दुर्गति है। एक भी सदगति वाला यहां हो न सके। सदगति में फिर एक भी दुर्गति वाला नहीं। सदगति वाले पवित्र होते हैं। उनको अपवित्र कोई छू न सके। ल०ना० के मंदिर में बाउन्डरी लगी रहती है। कोई छू न सके। परन्तु अपने को भूत पलीति समझते नहीं हैं। सारी दुनिया में भूत पलीति कोबाप आकर स्वच्छ बनाते हैं। परन्तु म्लेच्छों को यह भी पता नहीं है हम म्लेच्छ पत्थर बुधि हैं। अभी बाप बैठ समझाते हैं तुम भूत पलीति हो। अभी फिर पावन बनना है। पहले2 तो यह समझाना चाहिए यह बाबा है। यह कोई विद्वान आचार्य पंडित आदि नहीं हैं। यह बाप भी है, टीचर भी है क्योंकि पढ़ाते हैं। फिर सभी को सदगति में ले जाते हैं तो सद्गुरु भी है। सुप्रीम फादर, सुप्रीम टीचर, सुप्रीम प्रीसेप्टर भी है। बाकी तो यह विद्वान आचार्य पंडित आदि सभी पतित हैं। विकार से पैदा होते हैं। भक्त साधु महात्मा हो परन्तु देवताओं को हाथ नहीं लगा सकते। क्योंकि म्लेच्छ हैं। इसलिये बाउन्डरी लगा देते हैं। कोई छू न सके। आधा कल्प दुनिया स्वच्छ रहती है। आधा कल्प पतित रहती है। इसलिये सभी कहते हैं पतित पावन आओ। आकर हमको पावन बनाओ। आधा कल्प है पवित्र दुनिया। सूर्यवंशी चन्द्रवंशी। फिर वही आधा कल्प बाद वाममार्ग में जाते हैं। देवतायें भी विकार में जाते हैं। सदैव देवता नहीं रहते। देवतायें थे जरूर। जिनका मंदिर है। वह कितने स्वच्छ थे। कोई छू न सके। आजकल पैसा दो तो छूने भी देंगे। क्रिश्चन शिवत सभी से जास्ती तो इन साधुसंतों में है। यह जो अपने को ईश्वर कह अपनी पूजा कराते हैं उन्हों को ही हिरण्यकशियप कहा जाता है। शिवोऽहम कहते रहते हैं। भाईयां जाकर उन पर दूध चढ़ाती हैं, फूल चढ़ाती हैं। शिवोऽहम भी कहते रहते फिर कहदेते ईश्वर सर्वव्यापी है। तो यह बाप बैठ समझाते हैं कोई भी मनुष्य मात्र को ऐसे कह नहीं सकते कि बाप भी है टीचर भी है गुरु भी है। यह सभी बातें एक बाप ही आकर समझाते हैं। बाप कहते हैं मैं ही सर्व की सदगति दाता हूं। मुझे कोई भी नहीं जानते। विद्वानों को इतना भी पता नहीं हैं कि गीता किसने सुनाई। राजयोग किसने सिखाया। बाप तो एक ही बार आकर पढ़ाते हैं। ज्ञान सागर वह एक बाप ही है। उनको कहते हैं ज्ञानेश्वर। ईश्वर में ही सारा ज्ञान है। बाकी सभी मनुष्य मात्र में है अज्ञान। भक्ति को अज्ञान कहा जाता है।---

जिस कारण भारत का यह हाल हुआ है। कितनी दुर्गति हो गई है। इस समय भारत दुर्गति आयरएजेड में है। गोल्डेन एज में थे फिर 84जन्म लेते2आयरनएजेड बन पड़े हैं। तो ज्ञान का सागर एक ही बाप है। कोईमनुष्य को ज्ञान का सागर नहीं कहा जाता। देवताओं को भी नहीं कहा जाता। देवताओं में ज्ञान होता ही नहीं। सिर्फ तुम ब्राह्मण जो कि प्रजापिता ब्रह्मा के मुखवंशावली हो उनको यह ज्ञान है। ज्ञान सागर बाप द्वारा तुमको अभी ज्ञान मिला है। बाप आते ही हैं पुरुषोत्तम संगम युग पर। यही कल्याणकारी संगम युग है। जब कि पतित पावन बाप आकर पावन बनाते हैं। वह लोग फिर कह देते पतित पावनी गंगा नदी है। अभी गंगा जी का पानी तो बहुत पीते हैं पावन कहां बनते। पानी तो जहां तहां है। कुरुक्षेत्र नासिका आदि में नदी भी नहीं है जहां खड़ा हुआ पानी देखोगे समझेंगे यह है पतित दुनिया। गंदी मिट्टी भी उठाकर मलते हैं। बाप कहते हैं यह सभी करते और ही पतित बनते हैं। भक्ति में कितने व्यभिचारी बन पड़े हैं। जहां तहां माथा टेकते रहते हैं। शिव बाबा को तो शरीर है नहीं। शिव बाबा कोई को माथा टेकने नहीं देते। वह तो नालेज देते समझाते हैं। कहते हैं अपने को आत्मा समझो। जो अपने को देह समझते हैं वह बेहतर हैं। देह अभिमानि मनुष्यों को अछूत, देही अभिमानी देवताओं को स्वच्छ कहा जाता है। यह ल0ना0 कितने स्वच्छ हैं। सभी इनके आगे माथा झुकाते हैं। राजाएं महाराजाएं भी वह भी महाराजा। इनको कहेंगे महाराजा श्री ना0 महारानी श्री ल0। उनको कहेंगे महाराजा आफ बिकानेर। महाराजाएं और राजाएं दो हैं। सतयुग में ल0ना0 को महाराजा महारानी कहा जाता है। राम को राजा कहा जाता। यह राम महाराजा महारानी दोनों पावन, वह महाराजा महारानी दोनों पतित हैं। तो बाप समझाते हैं मैं तुमको राजाओं का राजा अर्थात पतित राजाओं से भी ऊंच पावन राजा महारानी बनाता हूं। राम को महाराजा नहीं कहेंगे। राम राजा कहते हैं। इनको राजा नारायण, नहीं महाराजा राजा नारायण कहेंगे। सिंगल ताज वाले पतित, डबल ताज देवताओं को माथा टेकते हैं। क्योंकि विकार में जाने से पतित बनते हैं। सर्प सर्पनी बन पड़ते हैं। शंकराचार्य कहते हैं नारी नर्क का द्वार है। यह शिवाचार्य कहते हैं नारी तो स्वर्ग का द्वार है। इसलिये वन्देमातरम गाया हुआ है। परन्तु यह कोई भी मनुष्य नहीं समझते। वेद शास्त्र गीता आदि पढ़ते हैं परन्तु भक्ति को मिक्स पढ़ते हैं। अर्थ कुछ भी नहीं। उनको भी यह पता नहीं लगता गीता का ज्ञान किसने दिया। क्रिश्चन लोग फिर भी जानते हैं क्राईस्ट ने यह धर्म स्थापन किया। बुध ने फलाने टाईम बुध धर्म की स्थापना की। ईब्राहीम कब आया यह भी उन्हों को मालूम है। भारत से फिर भी यह हिस्ट्री बुल हैं। भारत वासी तो बिल्कुल ही नानसेन्स हैं। उनको यह पता नहीं है भारत का हिन्दुधर्म तो है नहीं। आदि सनातन देवी देवता धर्म ही स्थापन हुई है। वह किसने स्थापन किया यह मनुष्यों को पता नहीं है। भारतवासियों को ही पत्थरबुद्धि भूत पलीती कहा जाता है ऊंच ते ऊंच फिर नीच ते नीचे भी यह बने हैं। ऊंच ते ऊंच निशानी शिव की है। इन्हों को आत्मा गाते भी हैं सर्व गुण सम्पन्न ... हम नीचे पापी हैं। हम अछूत बेहतर हैं। आप स्वच्छ हो। स्वच्छ को अछूत हाथ नहीं लगा सकते हैं। बाप तुमको ऐसा ऊंच बनाते हैं। इसलिये कहते हैं मामेकं याद करो। तो तुम पावन बन जावेंगे। बाप बैठ बच्चों को दृष्टि चक्र का राज समझाते हैं। हरेक आत्मा को इस ड्रामा में अनादि अविनाशी पार्ट मिला हुआ है। तो आत्मा भी अविनाशी भी है। उनको पार्ट भी अविनाशी है। इसलिये समझाया जाता है वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी कैसे रिपीट होती रहती है। सतयुग त्रेता ... फिर सतयुग में जो देवी देवतायें थे वही होंगे। फिर वही चन्द्रवंशी होंगे। 500करोड़ आत्मायें हैं। सभी एक्टर्स हैं। हरेक को अविनाशी पार्ट मिला हुआ है। इसको कहा जाता है बना बनाया अनादि अविनाशी वर्ल्ड ड्रामा। इस समय है रावण राज्य। रावण सम्प्रदाय हैं। सतयुग में भारत देवी सम्प्रदाय था। अभी आसुरी सम्प्रदाय बना है। क्योंकि भूत-पलीति हैं। विष खाते रहते हैं। इनको कहा ही जाता है आसुरी सम्प्रदाय। भल बड़े2 विद्वान आचार्य जो भी हैं जो अपने को श्री श्री 108जगतगुरु कहलाते हैं। वह नम्बरवन शैतान हैं। जगत का गुरु तो एक ही होता है। वही सुप्रीम बाप है, सुप्रीम टीचर है। सुप्रीम गुरु भी है। सब की सदगति करने वाला है। बाकी वह गुरु लोग ---

21-11-62

3

तो दुनिया को डुबोते हैं। मनुष्यों को कितना धोखा देते हैं। अभी बाप कहते हैं ऐसे गुरुओं को छोड़ो इन्होंने तुम्हारी दुर्गति की है। शास्त्रों का ज्ञान है ही भक्ति। इन शास्त्र आदि पढ़ने से कोई भी मेरे को प्राप्त नहीं होते। गीता में बाप ने कहा है जो भी साधु सन्त आदि हैं इन सभी का मैं उधार करता हूं। अभी जिनका बाप को उधार करना है वह अपने को गुरु कैसे कहला सकते। वह गुरु सदगति कैसे कर सकते। वह तो जो कुछ सुनाते हैं सभी झूठ। भगवान तो एक ही है जो पुनर्जन्म में नहीं आते। वह एक ही बेहद का बाप है। जिसके तुम बच्चे हो। सर्वव्यापी कहने से तो जानवरहुड हो जाते। इसको अज्ञान कहा जाता। इस अज्ञान के कारण भारत की कितनी दुर्गति हो गई है। यह भी ड्रामा का खेल है। सभी तो स्वर्ग में नहीं आते। आधा कल्प है ही देवी देवताओं का राज्य। फिर पिछाड़ी में आधा कल्प है वैश्यवंशी शुद्रवंशी। अभी है पुरुषोत्तम संगम युग ब्राह्मणों का। ब्राह्मणों को ही बाप पढ़ाकर मनुष्य से देवता बनाते हैं। पहला2 आदि सनातन देवी देवता धर्म अभी तक भी चला आता है। परन्तु विकारी होने कारण अपने को देवी देवता कह न सकें। हिन्दु हिन्दुआनी कहलाते हैं। यह है पतित। देवतायें हैं पावन। कितना फर्क पड़ जाता है। अभी यहां तुम आये ही हो बेहद के बाप से वरसा लेने। जो बाप भी है टीचर भी है गुरु भी है। कोई भी मनुष्य को ऐसे कोई बाप टीचर गुरु कह न सके। यह बेहद का बाप ज्ञान का सागर है। ज्ञान भी सुनाते हैं फिर साथ ले भी जायेंगे। यह एटमीक बम्ब आदि विनाश के लिये ही बने हुये हैं। विनाश के पहले याद की यात्रा से पावन बनना है। दुनिया में तो कोई भी बाप को जानते नहीं। तो याद कैसे करें। बाप को जानते ही नहीं तो फिर ढूंढेंगे कैसे। नानस्टेन्स ठहरे ना। ईश्वर को जानते ही नहीं। कहते हैं ईश्वर को जन्म-जन्मान्तर ढूंढा है। जब कि मालूम ही नहीं तो ढूंढेंगे कैसे। सर्वव्यापी है, कुत्ते बिल्ले ठिकर में फिर ढूंढेंगे कहां। बाप कहते हैं तुम कितने बेवकूफ तुच्छ बुधि हो। तुमको मालूम ही नहीं ईश्वर कौन है तो मूर्ख बुधि हुये ना। सर्वव्यापी है फिर मिलेगा कहां। बाप कहते हैं तुम कहां ढूंढेंगे। वह समझते हैं शास्त्रों से भगवान मिलता है। बाप कहते हैं मैं इन सभी से मिलता नहीं हूं। यह भक्ति अज्ञान मार्ग है। गायन भी है विनाश काले शिव बाबा से विपरीत बुधि जो कह देते हैं कुत्ते बिल्ले, ठिकरा भीतर में है। तुम बच्चों को है विनाश काले प्रीत बुधि। क्योंकि तुम बाप को जानते हो। सृष्टि के आदि मध्य अन्त को भी जानते हो। बाप आकर अपने साथ प्रीत जोड़ते हैं। शिव बाबा इस रथ में आकर कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पावन बन जायेंगे। यह ज्ञान एक बाप ही दे सकते हैं। वही ज्ञान का सागर है जो तुमको देते हैं। ऐसे नहीं कि गंगा स्नान करने से कोई पावन बनेंगे। एक तरफ कहते भी हैं हे पतित-पावन आओ, दूसरे तरफ गंगा को पतितपावनी कह देते हैं। अभी पतित-पावन है कौन? अभी तुम बच्चे सब शरीर बने हो। पानी कैसे पतित-पावनी बनेगा। यह महान मूर्खता है। कितने वहां जाकर निवास करते हैं। समझते हैं हम पावन बन जायेंगे। बाप कहते हैं यह तो महान पतित बनते हैं। कितने मूर्ख बन पड़े हैं। रावण को गदहे का सिर देते हैं ना। मनुष्य देवता से बदल टटू गदहे बिसल बन जाते हैं। गदहे बेवकूफ होते हैं। घड़ी2 मिट्टी में लेककर मैले बन पड़ते हैं। बाप भी कहते हैं खबरदार रहना - टटू बिसल फिर मैला नहीं बनना। मैं तुम्हारी आत्मा को पावन बनाने आता हूं। ऐसा न हो विकारी बन सारा श्रृंगार ही गंवा दो फिर ऐसा देवता बन सकेंगे नहीं बहुत सजा खायेंगे। अभी प्रालब्ध का समय है ना। इनको कांटों का जंगल कहा जाता है। सबसे बड़ा कांटा है विकार का। यह भी विकार ही आदि मध्य अन्त दुःख देते हैं। भगवानुवाच काम महाशत्रु है। काम पर जीत पाने से जगतजीत बनेंगे। अभी विनाश सामने खड़ा है। विनाश से पहले पवित्र बनना है प्रतिज्ञा करनी है। हम कब विकार में नहीं जायेंगे। फिर वहां तो निर्विकारी ही रहते हैं। प्रतिज्ञा को पालना जो नहीं करते हैं वह बहुत कड़ी सजा खाते हैं। सभा बैठती है। तुम शिव पर बल चढ़ते हो ज्ञान है। वह है अज्ञान। जीवघात करते हैं। समझते हैं हम शिव पर बल चढ़ते हैं तो हम स्वर्ग में चले जायेंगे। परन्तु स्वर्ग में कोई जा नहीं सकते। स्वर्ग में जाने की युक्ति तो बाप ही बतलाते हैं। मनुष्य मनुष्य को मुक्ति जीवनमुक्ति दे न सके। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग।